67

स्वर्ग की याद

(21:22–22:5)

क्या आपको कभी घर की याद ने सताया है? मुझे सताया है, वह भी बहुत बार; टैक्सस में, न्यू यार्क में, यूक्रेन में और कई जगह।[1] इससे भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि क्या आपको कभी *स्वर्ग* की याद ने सताया है? पिछले पाठ के आरम्भ में हमने जेम्स रोअ के गीत "होम फ़ॉर द सोल" की बात की थी। उस गीत के बोल हैं, "Oft, in the storm, lonely are we, sighing for home, longing for Thee" यानी "अक्सर, तूफ़ान में, अकेले होने पर, हमें घर की याद सताती है, तेरे पास आना चाहते हैं।"[2]

पिछले पाठ में हमने देखा कि "आत्मा का घर" सुन्दरता से चमकता है। अब हम देखेंगे कि महिमा से उज्ज्वल है और प्रेम से परिपूर्ण है। परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए यूहन्ना के विवरण से हर एक मन में वहां जाने की तड़प होनी चाहिए।

महिमा से उज्ज्वल (21:22-27)

परमेश्वर की महिमा (आयतें 22–25)

पिछले अध्ययन में अमूल्य मोतियों और कीमती धातुओं की बात की गई थी। निश्चय ही, स्वर्ग में मोती या सोना नहीं लगा है, बल्कि यह परमेश्वर की उपस्थिति के लिए कहा गया है। आयत 22 में हम पढ़ते हैं "और मैंने उसमें कोई मन्दिर न देखा,[3] क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेमना उसका मन्दिर हैं।"[4] हमने पहले ही कहा है कि नगर "अन्ततः परमपवित्र" था। इसमें कोई मन्दिर नहीं था, क्योंकि मन्दिर यह स्वयं *है*।[5] यह वह स्थान है, जहां परमेश्वर अपने लोगों से मिलता है, क्योंकि यह परमेश्वर का निवास स्थान है।

यूहन्ना ने आगे कहा, "और उस नगर में सूर्य और चान्द के उजाले का प्रयोजन नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उसमें उजाला हो रहा है, और मेमना उसका दीपक है।[6]और जाति-जाति के लोग उसकी ज्योति में चलें फिरेंगे, ... और उसके फाटक दिन को कभी बन्द न होंगे, और रात वहां न होगी" (आयतें 23–25)।[7]

यूहन्ना के समय में, रात को नगर के फाटक बन्द कर दिए जाते थे। स्वर्ग के फाटक कभी बन्द नहीं होंगे,[8] क्योंकि "रात वहां होगी ही नहीं।" परमेश्वर और मेमने की महिमा

हर जगह और हर कोने को रौशन करेगी।

जातियों का तेज (आयतें 24, 26)

आयत 24 का पहला भाग कहता है कि ''जाति-जाति के लोग स्वर्गीय महिमा में फिरेंगे।'' आयत आगे कहती है, ''और पृथ्वी के राजा अपने-अपने तेज का सामान'' नगर में लाएंगे। आयत 26 कहती है, ''और लोग जाति-जाति के तेज और विभव का सामान उसमें लाएंगे।'' संकेत यहां भेंट लाकर राजाओं द्वारा अपने से बड़े की हुकूमत को मानने का है। पूरे प्रकाशितवाक्य में यह ज़ोर दिया गया है कि प्रभु जातियों के ऊपर राजा है और एक दिन सब उसके प्रभुत्व को मानेंगे (2:26; 12:5; 15:3, 4)। संसार के अब तक के सबसे शक्तिशाली हाकिमों द्वारा पृथ्वी के सबसे बड़े भण्डार लाकर सिंहासन के सामने डालते हुए परमेश्वर को राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु मानने की कल्पना करें। संकेत यहां फिर इस विचार पर ज़ोर देता है कि *सारी* महिमा परमेश्वर की है और *सारी* महिमा स्वर्ग में होगी।

अफसोस की बात है कि कुछ लोग ''जातियों'' शब्द पर ज़ोर देकर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यह आयत सिखाती है कि आमतौर पर प्रकाशितवाक्य में ''जातियों'' अविश्वासियों को कहा गया है (11:2, 9, 18; 14:8; 16:19),[9] और इस प्रकार निष्कर्ष निकालते हैं कि सब लोगों का उद्धार हो जाएगा चाहे वे विश्वास करते हों या नहीं। ऐसा वे कैसे कर सकते हैं, मुझे नहीं मालूम, क्योंकि अगली आयत कहती है कि ''और उसमें कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करने वाला, या झूठ का गढ़ने वाला,[10] किसी रीति से प्रवेश न करेगा; पर केवल वे लोग जिनके नाम मेमने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं''[11] (आयत 27)।

प्रकाशितवाक्य यह सिखाता है कि ''हर कौम'' से लोग, यीशु में विश्वास *करने वाले,* उसके लहू में धोए गए *लोग होंगे*। (5:9; 7:9)। ''जातियों'' का ''तेज'' हर कौम के उन लोगों में से झलकेगा, जो पृथ्वी पर ''ज्योति में'' चलते थे (1 यूहन्ना 1:7), जो स्वर्ग में ''उसकी ज्योति में'' चलते रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 21:24)।

निश्चय ही सारी महिमा का देने वाला परमेश्वर ही है (4:11)। और किसी भी प्रकार की महिमा या तेज उसका केवल प्रतिबिम्ब है।

प्रेम से परिपूर्ण (22:1-5)

यहां तक यूहन्ना को नगर को दूर से देखने की अनुमति थी। 22:1-5 में स्पष्टतया उसे अन्दर की झलक पाने के लिए बुलाया गया कि परमेश्वर ने अपनी संतान के लिए क्या रखा है। (स्वर्ग की गली, नदी और जीवन के वृक्ष का चित्र देखें।)

स्वर्गीय प्रबंन्ध (आयतें 1-3क)

नगर के आकार से यह सुझाव मिलता है कि वहां के कई लोग ज़रूरतमंद थे और

परमेश्वर ने उनकी हर आवश्यकता को पूरा किया है। "पानी, भोजन और स्वास्थ्य, जीवन की तीन बुनियादी आवश्कताएं हैं,"[12] अध्याय 22 की पहली आयतें बताती हैं कि परमेश्वर तीनों आवश्यकताओं को पूरा करेगा, रूपक नगर से "परमेश्वर के स्वर्गलोक" में चला जाता है (2:7)। (मैंने ब्रायन वाट्स से नगर के भीतर एक सुन्दर पार्क की तस्वीर बनाकर दोनों अवधारणाओं को मिलाने के लिए कहा।)

स्वर्गदूत ने यूहन्ना को पहले "बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से निकलती"[13] (आयत 1) थी। लोगों ने काल्पनिक "जवानी का चश्मा" ढूंढ़ने में पूरी उम्र लगा दी, जिससे वे कभी बूढ़े न हों, परन्तु वे इसकी तलाश करते-करते मर गए। उन्हें इस बात का अहसास नहीं हुआ कि पृथ्वी पर ऐसा चश्मा है ही नहीं, परन्तु स्वर्ग में है, क्योंकि यह सिंहासन अर्थात जीवन के स्रोत में से निकलता है।

फिर यूहन्ना ने कहा कि उसने देखा कि "नगर की सड़क के बीचों-बीच ... नदी के इस पार और उस पार[14] जीवन का वृक्ष था;[15] उसमें बारह प्रकार[16] के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था" (आयत 2क)। जीवन का वृक्ष मनुष्यजाति से पाप के कारण छिन गया था (उत्पत्ति 2:9; 3:6, 22-24) और मनुष्यजाति को श्राप दिया गया था (उत्पत्ति 3:16-19)। परन्तु स्वर्ग में "फिर श्राप न होगा" (आयत 3क)[17] और जीवन का वृक्ष फिर मिल जाएगा (2:7; 22:14, 19)।[18]

वृक्ष के हर भाग से नगर के लोगों को आशीष मिली। इसके स्वादिष्ट फल से उनकी भूख मिट गई और इसके "पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे" (प्रकाशितवाक्य 22:2ख)। स्वर्ग में हम किस अर्थ में "चंगे" होंगे? पाप के कारण श्राप आया था और पाप के जाने से "चंगाई" अपने आप ही हो गई।[19] जब मैं पुरुषों और स्त्रियों को शारीरिक और मानसिक वेदना से चंगाई पाने की इच्छा करते देखता हूं तो विचार करता हूं कि शायद यही वह प्रतिज्ञा है कि स्वर्ग में अन्तत: हमें शारीरिक, मानसिक और आत्मिक चंगाई मिल जाएगी। इसके लिए हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि स्वर्ग में हम कभी बीमार नहीं होंगे!

स्वर्गीय उपस्थिति (आयतें 3क, ख, 4)

उत्पत्ति 3 वाले श्राप से परिश्रम और आंसू मिले थे (उत्पत्ति 3:16-19)। परन्तु उस श्राप का सबसे भयानक भाग यह था कि मनुष्य को परमेश्वर से अलग कर दिया गया था (उत्पत्ति 3:23, 24; देखें यशायाह 59:2)। प्रभु अब वाटिका में संगति के लिए मनुष्य के साथ नहीं "फिरता" था (देखें उत्पत्ति 3:8)। स्वर्ग में अन्तत: वह श्राप उठा लिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 22:3), और "परमेश्वर और मेमने का सिंहासन" वहां होगा (आयत 3ख)।

आयत 4 कहती है कि नगर के लोग "उसका मुंह देखेंगे" (आयत 4क)। पृथ्वी पर किसी को परमेश्वर का मुंह देखने की अनुमति नहीं है (निर्गमन 33:20, 23), परन्तु एक दिन "जिनके मन शुद्ध हैं, वे परमेश्वर को देखेंगे" (मत्ती 5:8)। इब्रानी मसीहियों को

लिखने वाले ने परमेश्वर को देखने की बात कही (इब्रानियों 12:14)। जैसे मछली पानी में रहने के लिए बनाई गई थी, पक्षी आकाश में उड़ने के लिए बनाए गए थे, वैसे ही हमारी आत्माएं परमेश्वर की उपस्थिति में रहने और समृद्ध होने के लिए बनाई गई थीं। यह स्वर्ग की सबसे बड़ी आशीष होगी (फिर से पढ़ें 21:3, 4)। ''स्वर्ग का सार परमेश्वर और उसके पुत्र के साथ रहना है।''[20]

इस विवरण में आगे जोड़ा गया है, ''और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा'' (22:4)। यह स्वामित्व का यानी यह संकेत देता है कि हम प्रभु के हैं (देखें 3:12; 7:3)। इसके अलावा इसमें समानता का भी बोध है: उसकी उपस्थिति में हम और से और उसके जैसे होते जाएंगे।[21] अपने पत्रों में से एक में यूहन्ना ने यही सच्चाई व्यक्त की: ''हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की संतान है, और अब तक यह प्रकट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रकट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है'' (1 यूहन्ना 3:2)।[22]

स्वर्गीय उद्देश्य (आयत 3ग)

हम आयत 3 का एक और पहलू नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहेंगे: ''और उसके दास उसकी सेवा करेंगे'' (आयत 3ग)।[23] प्रकाशितवाक्य स्वर्ग की तस्वीर को कामकाज किए जाने वाली अर्थात अर्थ भरपूर कामकाज की जगह के रूप में दिखाता है। न चाहते हुए भी सिद्धता में विश्वास करने वाला होने के रूप में मैं प्रभु की अपनी त्रुटि पूर्वक सेवा पर परेशान हो जाता हूं; परन्तु उस नगर में, उस सिद्ध वातावरण में मैं यह आशा करने का साहस करता हूं कि मेरी भेंटें अन्ततः वैसी हो जाएंगी जैसी होनी चाहिए। परमेश्वर की महिमा करने के अलावा मुझे नहीं मालूम कि आपको और मुझे क्या करने के लिए कहा जाएगा, परन्तु वचन यहां हमें आश्वस्त करता हैं कि हमारा वहां होना उद्देश्यपूर्ण होगा।

स्वर्गीय आशीष (आयत 5)

स्वर्ग का रोमांचकारी और दीन करने वाला चित्रण एक अतिरिक्त प्रतिज्ञा के साथ दो पुष्टियों से पूरा होता है कि प्रभु स्वर्ग का प्रकाश होगा। पहले हमें फिर बताया गया है कि ''फिर रात न होगी'' (आयत 5क)। मेरे लिए तो रात को सब-कुछ बेकार होता है। अन्धेरे में मेरी प्रतिरोधक शक्ति कम हो जाती है और दर्द बढ़ जाता है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि ''रात वहां न होगी'' (21:25)! फिर हमें याद दिलाया जाता है कि स्वर्गीय नगर में रहने वालों को ''दीपक और सूर्य के उजियाले का प्रयोजन न होगा, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा'' (22:5ख)।

अन्त में हमें बताया गया है कि ''वे युगानुयुग राज्य करेंगे'' (आयत 5ग)। प्रकाशितवाक्य में पहले हमने देखा था कि मसीही लोग इस समय प्रभु के साथ राज कर रहे हैं (5:10)[24] और मरने के बाद शहीद भी प्रभु के साथ राज करते रहेंगे (20:6)। अब हमें बताया गया है कि उसके साथ हमारा राज करना अनन्तकाल तक जारी रहेगा![25] हम कितने आशीषित होंगे!

सारांश

इस पाठ के आरम्भ में मैंने आपसे पूछा था कि आपको स्वर्ग की याद तो नहीं सताती। अब जबकि हमने आत्मा के घर का ईश्वरीय चित्रण देख लिया है, उस घर का जो सुन्दरता से चमकता, महिमा से उज्ज्वल और प्रेम से परिपूर्ण है, तो अब प्रश्न यह है कि क्या आपको वहां जाने की लगन है ?

हो सकता है कि मुझे यह पता न हो कि स्वर्ग में परमेश्वर मुझे क्या सेवा देगा, परन्तु मैं इतना जानता हूं कि वह यहां मुझसे क्या चाहता है: वह मेरा विश्वास और भरोसा चाहता है; वह मेरा आज्ञा पालन और निष्ठा चाहता है।[26] क्या मैं उसे वह देने को तैयार हूं ? सर्वेक्षण में, 87 प्रतिशत लोगों ने कहा कि उन्हें विश्वास है कि वे स्वर्ग में जाना चाहते हैं।[27] प्रभु के आंकड़े इतने आशावादी नहीं हैं (देखें मत्ती 7:13, 14)। इस मामले में अपने आप को धोखे में न रखें; कठोरतापूर्वक ईमानदारी बरतें कि क्या आप तैयार हैं ? यदि मुझे पता हो कि मैं तैयार नहीं हूं, तो मैं परमेश्वर के अनुग्रह को पाने तक एक ग्राही भी न लेता और न सोता। उम्मीद है कि आपकी भी यही प्रतिक्रया होगी।

टिप्पणियां

[1]आप चाहिए कि उन विशेष अवसरों की बात करें जब आप को घर की याद सताती थी। आप घर की याद यताने के और उदाहरण दे सकते हैं, जिनस आप के सुनने वाले परिचित हों। [2]जेम्स रोअ, ''होम ऑफ़ द सोल,'' *सौंग्स ऑफ़ फ़ेथ एण्ड प्रेज़,* संपा. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [3] पहले यह कहा गया था कि जो जय पाने वाले हैं वे ''उसके *मन्दिर* में दिन – *रात* उसकी सेवा करते हैं'' (7:15), जबकि हमारा वर्तमान वचन पाठ कहता है कि वहां *न* रात होगी (22:5) और *न* मन्दिर होगा (21:22)। यह सांकेतिक भाषा की तरलता (परिवर्तनशील स्वभाव) को ही दर्शाता है। ''दिन और रात'' का सांकेतिक अर्थ ''हर समय'' है, जबकि ''उसके मन्दिर में'' का अर्थ केवल ''स्वर्ग में'' है। *टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''तूफ़ान से ऊपर उठना'' में 7:15 पर नोट्स देखें। [4]इस पाठ की टिप्पणियों में पुराने नियम के कई वचन हैं, जिनकी झलक यूहन्ना द्वारा इस्तेमाल की गई भाषा में मिल सकती है। इनमें से कई यहेजकेल में से हैं। परन्तु इस ''घुमाव'' पर ध्यान दें: यहेजकेल ने अपने आदर्श नगर में बहा किए मन्दिर पर सात अध्याय लगाए, जबकि यूहन्ना ने कहा कि जिस नगर का उसने वर्णन किया है उसमें ''मन्दिर नहीं'' था। [5]याद रखें कि नगर महिमा पाई हुई कलीसिया को दर्शाता है। पौलुस ने ज़ोर दिया कि मसीही युग में कलीसिया परमेश्वर का मन्दिर, यानी वह विशेष जगह है, जहां परमेश्वर वास करता है (1 कुरिन्थियों 3:16; 2:21)। [6]ज्योति के रूप में परमेश्वर पर, देखें भजन संहिता 36:9; यशायाह 60:19, 20; 1 यूहन्ना 1:5. ज्योति के रूप में यीशु पर देखें यूहन्ना 1:9; 3:19; 8:12; 12:35. [7]यशायाह 60:11 की तुलना करें। [8]फाटक खुलने के संकेत का अर्थ यह नहीं है कि लोग न्याय के दिन के बाद स्वर्गीय नगर में प्रवेश करते और वहां से निकलते रहेंगे। फाटक खुलने का संकेत केवल *सुरक्षा* है। [9]*टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पृष्ठ 95 पर टिप्पणी 17 में मैंने कहा था कि ''प्रकाशितवाक्य में आमतौर पर'' ''जाति'' शब्द मसीह का विद्रोह करने वालों के लिए इस्तेमाल हुआ है। ''आमतौर पर'' शब्द महत्वपूर्ण है: ''*आमतौर पर,*'' न कि *हमेशा*। [10]यहां इस्तेमाल किए गए अधिकतर शब्द 21:8 में मिलते हैं। (इस पुस्तक के पाठ ''सब कुछ नया'' में उस आयत पर टिप्पणियां देखें।) ''अपवित्र'' शब्द का इस्तेमाल आमतौर पर मूर्तिपूजा के लिए किया जाता

था, परन्तु इसका इस्तेमाल सामान्य अर्थ में भी किया जा सकता है। KJV में "कोई भी चीज़ जो दूषित करती है" है।

[11]इस पुस्तक के पाठ "न्याय की पांच बातें जो आपको पता होनी आवश्यक हैं" में जीवन की पुस्तक पर नोट्स देखें। [12]रेअ समर्स, *वर्दी इज़ द लैंब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 214. [13]प्रकाशितवाक्य 22 ही एकमात्र अध्याय है, जिसमें इस पुस्तक में "परमेश्वर *और* मेमने के सिंहासन" का वाक्यांश मिलता है, (आयतें 1, 3), परन्तु यह विचार कि सिंहासन पर *दोनों* हैं (अधिकार की जगह पर) पहले कई बार आया है (3:21; 12:5)। [14]यूनानी धर्मशास्त्र गली, नदी और वृक्ष की स्थितियों पर स्पष्ट नहीं है। जैसे मैंने ब्रायन वाट्स से इस दृश्य को दर्शाने के लिए कहा वह एक सम्भावित प्रबन्ध है परन्तु औश्र सम्भावनाएं भी हैं। वचन नगर योजना में सबक देने के उद्देश्य से नहीं, परन्तु परमेश्वर के प्रबन्ध का आश्वासन देने के लिए दिया गया। [15]भजन संहिता 46:4; यहेजकेल 47:1–12; योएल 3:18; जकर्याह 14:8 में दिए गए विवरण देखें। [16]NASB वाली मेरी प्रति के मार्जिन नोट में है, "या, फल की फसलें।" ज़ोर फलों के प्रकार के बजाय फलों की निरन्तर आपूर्ति पर हो सकता है। जो भी हो, वचन कहता है कि स्वर्ग में *परमेश्वर हमारी हर आवश्यकता को पूरा करेगा*। [17]22:3क की तुलना जकर्याह 14:11ख से करें। [18]कोई हैरान हो सकता है कि जीवन का वृक्ष (एक वचन) "नदी के दोनों ओर" कैसे हो सकता है। मैंने *एक* ही पेड़ की जड़ों से फैले (मुझे बताया गया) बढ़े हुए जंगल को देखा है। इसलिए आप एक ही जड़ से कई "पेड़ों" के निकलने की बात सोच सकते हैं। बेशक हमें *सांकेतिक* भाषा के स्पष्ट बेमेलों की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। [19]कई लेखक *मसीही के* "जीवन का वृक्ष" को यीशु के क्रूस से जोड़ते हैं: क्योंकि कई बार नये नियम में यूनानी शब्द के अनुवाद "क्रूस" का अर्थ केवल "पेड़" या "लकड़ी" है। (NASB और KJV में प्रेरितों 5:30; 10:39; 13:29 की तुलना करें।) यीशु के बलिदान के द्वारा हमें आत्मिक चंगाई मिली है (देखें यशायाह 53:5)। [20]जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स, *द रैवलेशन टू जॉन (द अपोकलिप्स),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 194.

[21]परमेश्वर के नाम से संकेत मिलता है कि वह कौन है और मनुष्य का माथा उसके दिमाग को ढकता है। माथे पर परमेश्वर का नाम होना इस विचार को दर्शाता है कि मन पर और इस प्रकार पूरे व्यक्ति पर परमेश्वर का स्वभाव है। [22]2 कुरिन्थियों 3:18 के अनुसार, वह पविर्तन इसी जीवन में आरम्भ होता है। इसे अगले जीवन में पूरा किया जाएगा। [23]अनुवादित शब्द "सेवा" का अर्थ "धार्मिक सेवा" हो सकता है, जिस कारण कुछ अनुवादों में "उसकी आराधना करते" है। इस और हमारी स्वर्गीय सेवा के अन्य पहलुओं पर *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" के पाठ "तूफ़ान से ऊपर उठना" में 7:15 पर नोट्स देखें। [24]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" में 1:5, 6 पर टिप्पणियों के साथ "प्रकाशितवाक्य, 2" में 5:10 पर टिप्पणियां देखें। [25]वचन में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि मसीही लोग दूसरों *पर* राज करेंगे; शब्दावाली से केवल इस बात की पुष्टि होती है कि हम शाही परिवार के लोग रहेंगे। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 2" में 5:10 पर नोटस देखें। इस पुस्तक के पाठ "मसीह के साथ राज करना" में 20:6 पर नोट्स देखें। [26]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करते हैं तो मसीही बनने वाले को भरोसा करने और आज्ञा मानने की आवश्यकता या परमेश्वर के भटके हुए बालक को वापस होने की आवश्यकता समझाएं। समझाते हुए आप 1 यूहन्ना 3:2, 3 और इब्रानियों 12:14 का इस्तेमाल कर सकते हैं। [27]"ओपराह: ए हैवनली बॉडी?" *यू.एस. न्यूज़ एण्ड वर्ल्ड रिपोर्ट* (31 मार्च, 1997): 18.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या किसी अलग जातीय गुटों के धार्मिक लोग स्वर्ग में होंगे? (''जातियों'' के लिए मूल यूनानी शब्द का अर्थ ''जातीय गुट'' है।) यदि विभिन्न जातीय गुटों के लोग स्वर्ग में होंगे तो क्या आपको लगता है कि इन जातीय गुटों को पृथ्वी पर रहते हुए एक-दूसरे के साथ मिलकर चलना सीखना आवश्यक है?
2. पाठ के अनुसार, ''स्वर्ग में कौन'' होगा?
3. *जीवन* को बनाए रखने के लिए लोगों को कौन-सी तीन चीज़ों की आवश्यकता पड़ती है? क्या हमें *लगता है* कि हमें इससे अधिक की आवश्यकता है? 22:1, 2 के अनुसार स्वर्ग में ये तीनों आवश्यकताएं कैसे पूरी होंगी?
4. 22:3ग में हम पढ़ते हैं कि हम स्वर्ग में परमेश्वर की सेवा करेंगे। इस प्रश्न पर विचार करें: आपको क्या लगता है कि हमें वहां क्या करने के लिए कहा जा सकता है? (बाइबल हमें यह जानकारी नहीं देती, इसलिए इस प्रश्न का कोई सही या गलत उत्तर नहीं है।)
5. क्या आपको ''स्वर्ग की याद'' सताती है? क्या आप वहां जाना चाहते हैं?
6. क्या आप स्वर्ग में जाने को तैयार हैं?

स्वर्ग की गली, नदी और जीवन के वृक्ष का चित्र देखें (22:1, 2)